शोध-चिंतन पत्रिका: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक:3; जुलाई-दिसंबर, 2021; पृष्ठ संख्या: 96-102

चंद्रकांता की कहानियों में कश्मीरी जीवन का यथार्थ

✍ संगीता

शोध सार:

कश्मीर ही नहीं, देश- दुनिया की हर उस मानवीय त्रासदी को चंद्रकांता अपनी कहानियों में जगह देती है, जिसमें एक संवेदनशील रचनाकार का मन आहत और उद्वेलित होता है। वे उस भ्रष्ट व्यवस्था और मनुष्य विरोधी तंत्र को कटघरे में खड़ा करतीं हैं ,जिसने तेजी से बदलते समाज में चारों तरफ के संघर्ष से घिरे मनुष्य की आंतरिक अनुभूतियों को कहीं गहरे दफन कर दिया है। व्यक्ति और व्यवस्था की मुठभेड़ में वे पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रत्येक विषम परिस्थिति एवं प्रवृत्ति की समीक्षा करती है, तत्पश्चात उन तथ्यों का अन्वेषण करती है, जिससे मनुष्य की अंतर आत्मा को मरने से बचाया जा सके और इस प्रकार एक बेहतर कल के लिए मनुष्यों के स्वप्नों, संवेदनाओं और स्मृतियों को सिरज लेने की चिंता चन्द्रकांता की कहानियों का प्रस्थान बिंदु बन जाती है।

बीज शब्द: *चंद्रकांता, कश्मीरी समाज, राजनीति।*

प्रस्तावना:

कश्मीर के श्रीनगर में जन्मी चंद्रकांता कश्मीर केंद्रित अपने विपुल लेखन के लिए हिंदी जगत में खासी लोकप्रिय है। अपनी कहानियों में उन्होंने देश विभाजन के तत्काल बाद कश्मीर संकट से उपजे हालात से लेकर 'जेहाद' के नाम पर जारी आतंकवाद से झुलसते कश्मीर की आबोहवा और आवाम के दुख दर्द का चित्र उकेरा है, जहां वे यथास्थिति का चित्रण भर करके नहीं रुक जाती अपितु प्यार, ईनाम और इंसानियत से लबरेज पात्रों का सृजन कर कट्टरता एवं हिंसा के विरुद्ध आवाज उठाती है।

विश्लेषण:

"प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता

है"(शुक्ल 2015:13) आचार्य शुक्ल जी की निम्न पंक्तियाँ तब और भी प्रासंगिक हो जाती है जब हम चंद्रकांता के कथा-साहित्य से रूबरू होते हैं। चंद्रकांता हिन्दी के उन विरल कहानीकारों में से है जिन्होंने राजनीतिक आन्दोलनों व भाषण से दूर रहते हुए विमर्श के सीमित दायरों से आगे बढ़कर सामाजिकता के प्रसार को छूते हुए व्यापक मानव मूल्यों और सामाजिक सरोकारों वाली कहानियों की रचना करके अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। सन् 1967 में 'कल्पना' पत्रिका में प्रकाशित पहली कहानी 'खून के रेशे' से विगत 50 वर्षों से उनकी कहानी यात्रा इस बात की गवाह है कि चंद्रकांता ने अपने समसामयिक परिस्थितियों को देखकर सामाजिक सरोकार से जुड़े उन सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को समाज के सामने प्रस्तुत किया है जिसे साहित्यिक समाज ने छुआ तक नहीं था और इसके माध्यम से समाज के यथार्थ को दर्शाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

'धरती का स्वर्ग' कहे जाने वाले कश्मीर में जन्मी चंद्रकांता की कहानियों का केन्द्र कश्मीर है व उनकी ख्याति का कारण भी कश्मीर है। "'वादी, वितस्ता और संगरमाल', 'पहाड़ों से पठार तक', 'बाजार से गुजरते हुए', 'समय के कठघरे में' जैसे कहानी संग्रहों की रचना करके उन्होंने कश्मीरी समाज, कश्मीरी संस्कृति और उसकी सांस्कृतिक विरासत को न केवल एक पहचान दी है अपितु आतंकवाद, अलगाववाद, साम्प्रदायिकता और धार्मिक उन्माद से ग्रसित खून के छीटों से भीगे हुए कश्मीर के यथार्थ को बहुत सरलता, सहजता और प्रमाणिकता के साथ दर्शाया है। चंद्रकांता की कहानियों में हमें भारतीय स्वतंत्र्योत्तर पश्चात् तथा देश विभाजन की त्रासदी के दंश से बनी कश्मीर की स्थिति व कश्मीरी समाज में साम्प्रदायिक उन्माद से लेकर आतंकवाद अलगाववाद, उपेक्षा, शोषण की पीड़ा को सहते कश्मीरी समाज का यथार्थ चित्र अंकन किया गया है तथा वह केवल इस यथार्थ तक सीमित नहीं रहती है वे सामाजिक सौहार्द के लिए उच्च मानवीय मूल्यों और इंसानियत की चेतना से ओतप्रोत होकर कट्टरता, हिंसा और उन्माद के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलन्द करती है।

चंद्रकांता अपनी 'शायद संवाद' कहानी के माध्यम से कश्मीरी हिन्दुओं के विस्थापन की पीड़ा व निष्कासन के दंश से अपने हालातों और कश्मीरी हिन्दुओं के अपनी जड़ों से कटने की पीड़ा के बीच कश्मीरी वादियों में शांति बहाली के लिए सम्भावनाएँ तलाशती है। पलायन की पीड़ा की जीते हुए 'नीलकंठ' बारह वर्षों के पश्चात् कश्मीर लौटते हैं और इसके माध्यम से चंद्रकांता यह सत्य हमारे सामने रखती है कि कश्मीर में हिन्दू हो अथवा मुसलमान दोनों ही धर्म के लोग आतंकवाद की समस्या से पीड़ित व शोषित है।

> पहले हिन्दुओं को घर बाहर कर दिया फिर मुसलमानों को भी कहा बक्शा? आधी रात घरों में घुसकर खाने-पीने की फरमाइशे तो करते ही थे, घर की बहू-बेटियों की बेहुरमती करने से भी गुरेज नहीं किया। जिसने समझाने की कोशिश की उसे गोली से भूनकर खामोश कर दिया।
>
> (चंद्रकांता 2009:63)

सन् 1989-90 के बीच कश्मीर घाटी से निष्कासित कश्मीरी हिन्दुओं को जम्मू दिल्ली के रिफ्यूजी कैम्पों में नारकीय जीवन जीना पड़ा। चंद्रकांता इस प्रश्न को अपनी कहानियों में प्रमुखता के साथ उठाती है। जो अपने बसे बसाए घरों को छोड़ने को मजबूर हो गए और आज भी जो अपनी खुली हुई जड़ों को स्थापित करने के लिए अपने ही देश में शरणार्थी बने हुए विस्थापन के दंश को झेल रहे हैं। अपने ही राज्य में गैर मुस्लिम होने के कारण यानी हिन्दुस्तानी एंजेड होने के कारण अपने ही राज्य से निष्कासित कर दिए गए तो दूसरी तरफ सरकारों ने तुष्टीकरण और धर्म निरपेक्षता की दिखावटी राजनीति के कारण कश्मीरी हिन्दुओं की समस्याओं और उनके स्थायी समाधानों को हमेशा हाशिए पर रखा गया जिसने इनके भीतर अपने ही देश में शरणार्थी होने की भावना को लगातार प्रबल किया। चंद्रकांता ने मानवीय त्रासदी की इस विभत्सय घटना को प्रमाणिकता के साथ अपनी कहानियों के माध्यम से कश्मीर के इस यथार्थ को प्रस्तुत किया है। अलगाववाद, आतंकवाद, उन्माद, हिंसा की तमाम घटनाओं के बावजूद कश्मीरी समाज की एकता अखण्डता और सौहार्द की चेतना को उकेरना भी चंद्रकांता नहीं भूलती है।

> हाँ समझ गया उन्हें कश्मीर वादी चाहिए कश्मीरियों से उन्हें कोई मुहब्बत नहीं।

भाई की दुगर्त देखकर उसका भरम टूट गया। चिल्लयकलान में कुपवाड़ा की पहाड़ियों में गन देकर भेज दिया 'लड़ो ओर मरो'।

(चंद्रकांता 2009:63)

कहानी 'पोशनूल की वापसी' धार्मिक भेद-भाव से अलग इन्सानियत के संबंधों के होने का सुखद पल देती है। इस कहानी में महदा चाचा अपनी जान पर खेलकर अपने मालिक बबलाल और उसके परिवार को कबाइलियों के जुल्मों से बचाता है तो वही बबलाल महदा के बुरे वक्त में उसके बच्चों की परवरिश का खर्च उठाकर अपने फर्ज का निर्वहन करता है। चंद्रकांता कश्मीरी संवेदना को जो कि मानवता, इंसानियत, शांति, सौहार्द की प्रतीक है उसके सभी पहलुओं से हमें अवगत कराती है।

चन्द्रकाता अपनी कहानियों के माध्यम से कश्मीरी समाज के साहस, संघर्ष और हौसले की आवाज़ को बुलन्द करती है। 'आवाज़' दहशतगर्दों के द्वारा प्रताड़ित कश्मीरी लड़की 'विनी' के साहस और संघर्षों की कहानी है। कश्मीरी लड़कियाँ किस तरह से दहशतगर्दों की हैवानियत का शिकार होती है उस पीड़ा की आवाज़्ा है यह कहानी। कश्मीरवादी इस पीड़ा को कैसे सहती है उसका यथार्थ चित्र चंद्रकांता अपनी कहानियों में बयाँ करती हुई दिखती है। मैथिलीशरण गुप्त की इतिहास प्रसिद्ध पंक्तियाँ "अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी आँचल में दूध आँखों में पानी" से चंद्रकांता बिल्कुल असहमत दिखाई देती है। वह नारी को अबला या विवश नहीं मानती है। वह नारी जाति को अपने अधिकारों के प्रति संघर्ष करने की प्रेरणा देती है अपने अस्तित्व अस्मिता के प्रति सचेत करती है। चंद्रकांता ने स्त्रियों के विभिन्न प्रसंगों पर कहानियाँ लिखी है। वह स्त्री के दुखों को मनुष्य मात्र का दुख मानती है और अपने कहानियों में संघर्षशील, साहसी और अपनी अस्मिता अस्तित्व के लिए आवाज़्ा उठाने वाले पात्रों का सृजन भी इसीलिए किया है।

मानवीय अस्मिता एवं न्याय की पक्षधर चंद्रकांता अपनी कहानियों में उस भ्रष्ट व्यवस्था और मनुष्य विरोधी तंत्र को कठघरे में खड़ी करती है जिसने तेज़ी से बदलते समाज में चतुर्दिक संघर्ष से घिरे

> मनुष्य की आंतरिक अनुभूतियों को कही गहरे दफन कर दिया है। व्यक्ति और व्यवस्था की मुठभेड़ में वे पूरी प्रतिबद्धता के साथ प्रत्येक विषम परिस्थितियों की समीक्षा करती है तत्पश्चात् उन तथ्यों का अन्वेषण करती है। जिससे मनुष्य की अन्तरात्मा को मरने से बचाया जा सके और इस प्रकार एक बेहतर कल के लिए मनुष्य के स्वप्नों, संवेदनाओं और स्मृतियों के सिरज लेने की चिन्ता चंद्रकांता की कहानियों का प्रस्थान बिन्दु बन जाती है।
>
> (चंद्रकांता 2020:07)

चंद्रकांता की कहानियाँ हमें कश्मीरी समाज के सरोकारों से जोड़ने का कार्य करती है तथा समसामयिक परिस्थितियों की अनुगूंज हमें चंद्रकांता की कहानियों में देखने को मिल जाती है। चंद्रकांता की दृष्टि यथार्थवादी है उन्होंने अपनी कहानियों में न केवल कश्मीरी इतिहास, परम्परा, सांस्कृतिक विरासत का गहन दृष्टि से विश्लेषण करती है अपितु कश्मीर के लोकजीवन सामान्य जनता में हिन्दू मुस्लिम सौहार्द और विरासत का सूक्ष्मता के साथ चित्रण करते हुए वर्तमान कश्मीरी जीवन साम्प्रदायिक उन्मादों की स्थितियों तथा देश विभाजन के पश्चात् चली आ रही राजनैतिक उथल-पुथल का बड़ा ही मार्मिक और संवेदनात्मक चित्रण करती है तथा सामाजिक विसंगतियों पर तीखे प्रश्न करने से भी हिचकती नहीं है।

'सूरज उगने तक' कहानी कश्मीर की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विषमता वैषम्य व मूल्यहीनता से उपजी परिस्थितियों का उचित मूल्यांकन करती हुई दिखाई पड़ती है। कश्मीरी युवाओं के अन्दर आ रहे सार्थक बदलवों के लिए उन्हें तैयार करती हुई दिखाई पड़ती है। जहाँ कश्मीरी युवा मानवीय चेतना और संवेदनात्मक दृष्टि के कारण अपनी नौकरी की परवाह किए बिना एक गरीब मजदूर की जान बचाता है। कश्मीर की भ्रष्ट व्यवस्था और मानवहीनता तंत्र पर चंद्रकांता कटाक्ष करती है। मानवता और व्यवस्था में वह मानवता की विषम परिस्थितियों के लिए भ्रष्टाचारी तंत्र को जिम्मेवार ठहराती है। चंद्रकांता सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सरोकारों से जुड़े हुए उन सभी प्रश्नों को उठाने का प्रयास करती है जिससे सम्पूर्ण कश्मीरी समाज ग्रसित है। वह कश्मीरी समाज में आए नकारात्मक

माहौल को भी दर्शाती है तथा सकारात्मकता की पक्षधरता भी करती हुई दिखती है।

> चंद्रकांता की कहानियों में मानवीय सरोकारों की मुख्य धुरी परिवार है जिसके ताने-बाने में बनते-बिगड़ते सम्बन्धों एवं समीकरणों का लेखा अपने समय के गुट्ठिल सामाजिक यथार्थ का रेशा-रेशा उजागर करता है और इन्हीं ब्यौरे में जब लेखिका संवेदना के सूत्र पकड़कर मनुष्य के भावजगत का निरीक्षण करती है। तो मन को कचोटता, करुणा व अवसाद भरा संगीत कहानियों में सिग्नेचर ट्यून की तरह सुनाई देती है।(चंद्रकांता 2020:08)

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ मानव मूल्यों को दरकिनार करके निजी हित को प्राथमिकता दी जाती है। वैसे समय में चंद्रकांता अनुभूतियों व भावों को जागृत करके मनुष्य के होने व उसकी मानवता, इंसानियत, नैतिकता को केन्द्र में रखती है और अपनी कहानियों को सामाजिक सरोकारों से जोड़े बिना नहीं रह पाती है।

निष्कर्ष:

चंद्रकांता की कहानियाँ सामाजिक सरोकारों, मानवीय मूल्यों और नैतिकता से परिपूर्ण है। चंद्रकांता ने अपनी कहानियों की विषयवस्तु के माध्यम से कश्मीर से निष्कासित कश्मीरी हिन्दुओं के विस्थापन के दंश को हमारे समक्ष जितनी प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है व मानव जाति की सबसे बड़ी त्रासदी की पीड़ा के यथार्थ को उकेरा है वह अपने आप में अतुलनीय है। चंद्रकांता ने कश्मीरी हिन्दुओं के साथ-साथ कश्मीरी मुसलमानों व सामान्य जनता के दुख-दर्द को भी हमारे समक्ष रखती है। इसके साथ-साथ कश्मीरी लोक जीवन व उसकी सांस्कृतिक विरासत का भी उचित मूल्यांकन किया है। यह कहना उचित होगा कि चंद्रकांता की कहानियों में हमें कश्मीरी के आँचलिक जीवन और उसकी लोक चेतना का मनोरम यथार्थ भी देखने को मिलता है। चंद्रकांता की कहानियाँ कश्मीरी समाज के यथार्थ को बयाँ तो करती ही है उसके साथ कश्मीरी समाज को एक नई दिशा दृष्टि व व्यापक परिवेश देने का कार्य करती हुई दिखाई देती है।

ग्रंथ-सूची:

शुक्ल,रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. दरियागंज:वाणी प्रकाशन, 2015.

चंद्रकांता.रात में सागर.प्रथम.गाजियाबाद:रेमाधव पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, 2009.

--.प्रतिनिधि कहानियाँ.प्रथम. दरियागंज:राजकमल पेपरबैक्स, 2020.

संपर्क-सूत्र:
शोधार्थी
पीएच.डी., हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
मोबाइल नं. 7065206900